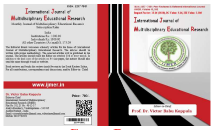
Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(1), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

शिवमंगल सिंह सुमन की कविताओं में मिट्टी की माहिमा

डॉ .डी.सत्यलता
हिन्दी विभाग , आंध्र विश्वविध्यालय
विशाखापट्टनम

परिचय

किसी भी कवि की कविता पर विचार करने के पूर्व उनके जीवन एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना इसलिए आवश्यक हो जाता है कि उसका जीवन कविता को अत्यधिक प्रभावित करता है। सामाजिक प्राणी होने के के कारण कवि जीवन की परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है । अतः डॉ सुमन का जन्म 1916 में झगरपुर जिला के उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ।

डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक है। सुमन जी बड़े ही सफर उदयविनीत और मिलनसार व्यक्ति हैं। जिन लोगों से उनका संपर्क होता है वह उनके स्वभाव की विशेषताओं को भुला नहीं पाते। सुमन जी के स्नेह शीलता में भारत के ग्रामीण जीवन की मस्ती विद्यमान है। वह मनुष्यों को मनुष्य की हैसियत से ही देखता है। सुमन जी हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगाली एवं नेपाली साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान है।

सुमन जी अच्छे वक्ता और कवि सम्मेलनों के सफल कवि हैं। उनकी वाणी में ओजस्विता के साथ माधुर्यता का भी समावेश हो गया है।

सुमन जी की कृतियों का परिचय

अभी तक सुमन जी की सात काव्य कृतियां प्रकाशित हुई है- हिल्लोल, जीवन के गान , प्रलय - सूजन, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आंखें नहीं भरी, विन्ध्या हिमालय और मिट्टी की बारात।
सुमन जी की कविताओं में नियतिवादी भूमि पर जीवन की क्षण भंगुरता पर विश्वास करने वाले एक असफल प्रेमी के रूप में उपस्थित हुए हैं। मिट्टी की बारात शीर्षक कविता अत्यंत

महत्वपूर्ण बन पड़ी है कि उसमें दो आत्माओं के पुनीत प्रेम का बंधन व्यक्त किया गया है। अपनी प्रियतमा कमला नेहरू के निधन के बाद उसके भष्मवशेषों को जवाहरलाल नेहरू ने सुरक्षित इसीलिए रखा की इस संसार की अंतिम यात्रा के बाद दोनों की मिट्टी साथ-साथ महाप्रयाण करेगी और साथ-साथ प्रवाहित होकर सिंधु में मिल जाएगी।

एक अंबुधी की व्यथा है
एक अंबर की व्यथा है
और कण - कण की धरा पर
एक अपनी भी कथा है

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(1), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

वेदना कन चुन यहां कवि।
देख नभ में रवि - उदय भी
देख सागर है सदय भी
और नर के शुष्क पथ पर
साथ नारी ह्रदय भी
आंख खोले चल यहां कवि ।

देख महलों की ऊंचाई
रक्त से किसने रचाई
विश्व तुमसे चाहता है
जाना ना इसकी सच्चाई

बात सच्ची कहां यहां कवि।
स्वर्ण सौदों के उजेरा
दीन कुटिया का अंधेरा
है जहां निशि व्याप्त कब से
पर नहीं होता सवेरा
ज्योति बन तू जल यहां कवि।

उपर्युक्त पंक्तियां शिवमंगल सिंह सुमन की 'कवि' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इन पंक्तियों में सुमन जी 1915 ने कवि से कुछ मांग की है। उनकी यह मांग स्वयं अपने भीतर के कवि से भी है और कहना न होगा कि उनकी कविता यह मांग पूरी करती है।

सुमन की कविता किसी एक दशा में नहीं चलती। उसका अनुभव संसार व्यापक है। उसमें निजी सुख - दुख भी है और बाह्य वास्तविकता भी राष्ट्रीयता भी है और अंतरराष्ट्रीयता का स्वर भी है।
नवीनता के प्रति आकर्षण भी है और पुरातन की स्वीकृति भी। और इन सबके ऊपर एक आशा, आस्था, उत्साह तथा प्रगतिशील दृष्टि है जो कवि को मिट्टी की महिमा की और आकर्षित करती है।

सौ बार बने सौ बार मिटे लेकिन मिट्टी अविनश्वर है

मिट्टी मिट्टी पर मिटती है
मिट्टी मिट्टी को रचती है
मिट्टी में सवार है, संयम है, होनी अनहोनी कहा जाए।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(1), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

शिवमंगल सिंह सुमन का एक काव्य संग्रह है "मिट्टी की बारात"(1972)।
यह काव्य ग्रंथ सचमुच मिट्टी की महिमा का गीत है-

मिट्टी सदा कुंवारी है उसमें है अनंत रस
मिट्टी कभी मिटती नहीं, मिट्टी कभी मिटती नहीं"

मिट्टी अर्थात धरती, मही, वसुधा, वसुंधरा, रसा, धरित्री, धरा आदि। शायद ही कोई ऐसा काव्य संग्रह हो जिसमें मिट्टी के इतने पर्याय एक साथ उपस्थित हो। कवि ने मिट्टी की समस्त संचित संवेदना को जागने का प्रयास किया है-

जाने इस कलशी में
क्या है छिपा गुढ़ मौन
राशि राशि संवेदन।

जिस मिट्टी में राशि राशि संवेदन है वह जड़ नहीं हो सकती, उसका अपना अनुभव संसार है-

मिट्टी मिट्टी का स्पर्श
इतना सुखद होता है?
मुंह को अनुबिंदुओं में
इतनी विशद व्यंजन!

मिट्टी की बारात संग्रह में मिट्टी शब्द का अपने अनेक परियों सहित इतनी बार प्रयोग आकस्मिक नहीं है। यह एक शब्द बहुत सारे रचनात्मक संकेत को उद्धारित करता है। सामान्य व्यवहार में मिट्टी शब्द का प्रयोग प्रायः किसी महत्वहीन ना चीज वस्तु के लिए किया जाता है। मिट्टी में मिल जाना या 'मिट्टी के भाव बिकना' जैसे मुहावरे प्रचलित मुहावरे हैं। कभी-कभी यह शब्द जड़ता बोधन भी हो जाता है। आम व्यवहार में इस शब्द का संबंध प्रायः के

साथ जोडा जाता है, जैसे मिट्टी का तन मिट्टी में मिल जाएगा। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कवि ने लोक व्यवहार से उठाकर इस शब्द को महिमा मंडित किया है। कवि के कोष में मिट्टी जड़ नहीं चेतन है उसमें रोम ना हो पर रोमा रोमरंध्र तो होते ही है। इसका एक संजीव अनुभव संसार होता है। मिट्टी की बारात शीर्षक कविता में कवि ने जवाहरलाल और कमल के फूलों अंतिम अवशेषोंको गंगा की धारा में एक साथ मिलकर मिट्टी के इस संजीव अनुभव संसार को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। मिट्टी और मिट्टी का स्पर्श कितना संजीव, केंद्रीय और संवेदनशील होता है! नर नारी के प्रथम आलिंगन की तरह। करुणा के मिश्रण ने मिट्टी की बारात शीर्षक कविता को अत्यंत मार्मिक और मानवीय बना दिया है। जवाहर और कमल का फूल किसी विशिष्ट महिमा मंडित व्यक्ति का फूल नहीं रह गया है।

व्यक्ति की विशिष्टता का
व्यर्थ है बखान यहां
अर्थ दे रही समष्टि
अमर प्राण धारा को
हम तुम्हें ब्याज मंत्र

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(1), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

यथाशक्ति काम किया
छुट्टी ली, चिर विराम
राम राम।

शिवमंगल सिंह सुमन कवि की समूह दृष्टि या मानवीय दृष्टि है जो जवाहर और कमला की बारात के रूप में सार्थक करती है और त्रिवेणी की धारा को सामान्य जीवन धारा का पर्याय बना देती है-

जन-जन के गालों पर

विगलित हो बहता है
धरती का सबसे अनमोल

यही मोती है
मानवीय मार्मिक
संवेदना की धरोहर
स्वर्ग लोक में अलभ्य
धन्य है इसी से धारा
विश्वम्भरा ।

मिट्टी की, मिट्टी से प्यार सामान्य जिंदगी से प्यार है। प्रस्तुत संसार से प्यार। इसलिए सुमन की कविता पाठक को किसी तीसरे संसार की ओर नहीं ले जाती है। सुमन की कविताओं में प्रस्तुत संसार का रुपाकर्षण - रंगों और ध्वनियों सहित पूरा दृश्य खंड प्राप्त होता है। मिट्टी शब्द का अपने अनेक पर्यायों सहित इतनी बार प्रयोग आकस्मिक नहीं है। यह एक शब्द कवि के बहुत सारे रचनात्मक संकेतों को उद्घाटित करता है। सामान्य व्यवहार में मिट्टी शब्द का प्रयोग प्रायः किसी महत्वहीन ना चीज वस्तु केलिए किया जाता है । प्रस्तुत काव्य - संग्रह में कवि ने लोक -व्यवहार से उठकर इस शब्द को महिमा -मंडित किया है। कवि की दृष्टि में मिट्टी जड़ नहीं चेतन है उसमें रोंम न हों पर रोम न हों पर रोमरंध्र तो होते ही हैं । उसका एक सजीव अनुभव - संसार होता है। सुमन ने इस कविता का शीर्षक को अत्यंत मार्मिक और मानवीय बना दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. मिट्टी की बारात - शिव मंगल सिंह सुमन
2. समकालीन हिन्दी कविता - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
3. डॉ . शिवमंगल सिंह सुमन व्यक्तित्व - कृतित्व - डॉ . सुरपनेनी शेषरत्नम
4. विश्वास बढ़ता ही गया - डॉ . शिव मंगल सिंह सुमन